किसान गोष्ठी में दी गई खेती-बाड़ी संबंधी वैज्ञानिक जानकारी

जनता कॉलेज, बकेवर, इटावा द्वारा ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (रावे) कार्यक्रम के तहत आज दिनांक 18 अक्टूबर 2023 को ग्राम नगला बनी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसान गोष्ठी के संयोजक डॉ एमपी सिंह ने फसलोत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी देकर बताया कि किस तरह किसान सुरक्षित फसलोत्पादन बढ़ाकर अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं उन्होंने बताया कि किसान प्रत्येक कृषि कार्य जैसे बुवाई , निराई गुड़ाई सिंचाई फसल सुरक्षा उपाय एवं कटाई समय से संपादित कर फसलोत्पादन बढ़ा सकते हैं साथ ही अधिक उपज देने वाली कम समय में पकने वाली ,रोग रोधी प्रजातियों का चयन करें, पोषक तत्व प्रबंधन समन्वित पोषक तत्व प्रणाली के द्वारा गोबर की खाद कंपोस्ट वर्मी कंपोस्ट जैव उर्वरकों हरी खाद के साथ-साथ बुवाई के समय रासायनिक उर्वरकों को देकर करें , साथ ही सीड ड्रिल के द्वारा लाइन में बुवाई समय से करें और फसल चक्र में दलहनी फसलों को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें, जिससे भूमि मजबूत होगी। यदि सरसों बोना है तो उर्वशी और कृष्णा , गेहूं बोना है तो एचडी 2967 व काला गेहूं की प्रजातियां बोकर अधिक उपज ले सकते हैं। फसल में रसायनों का प्रयोग कम कर जैव का प्रयोग अधिक करें जिससे लंबे समय तक सुरक्षित उत्पादन मिल सके। फसलों में सिंचाई क्रांतिक अवस्था पर करें साथ ही खरपतवारों का नियंत्रण फसल चक्र अपनाकर या चारे वाली फसल लेकर या डबल पलेवा विधि अपनाकर व यांत्रिक विधि अपनाकर करें। इस क्षेत्र में लंबे समय से धान गेहूं फसल चक्र के स्थान पर मक्का लाही गेहूं मूंग या उर्दू टोरिया गेहूं कद्दूवर्गीय या उर्दू सरसों एमपी चरी फसल चक्र अपनाए , जिससे उत्पादन भी अधिक होगा और आय भी अधिक मिलेगी साथ ही भूमि मनुष्य पशु व पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। कार्यक्रम में पादप रोग विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ मनोज यादव ने फसल सुरक्षा पर अपने उद्बोधन से किसानों को बताया कि अच्छी उपज लेने के लिए सबसे पहले रोग रहित अच्छे एवं स्वस्थ्य बीज का चुनाव करें , फसलों के बीज उपचार के लिए कवकनाशी , कीटनाशी एवं राइजोबियम कल्चर से उपचार करने की प्रक्रिया को क्रमबद्ध ढंग से अपनाए। उन्होंने बताया कि बुवाई के समय को हमेशा ध्यान में रखें तथा अच्छी फसल की पैदावार के लिए फसल बृद्धि के समय निरीक्षण करना बहुत आवश्यक है यदि कोई पौधा रोग ग्रसित है तो उसको तुरंत खेत से निकाल देना चाहिए। उन्होंने बताया कि धान के झूठा कंडवा रोग के प्रबंधन के लिए कवकनाशी प्रापीकोनाजाल का 0.2% घोल बनाकर अर्ध पुष्पा अवस्था पर छिड़काव करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने फसलों की जैसे आलू , गेहूं, चना आदि की उत्तम किस्मों को बोने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में पशुपालन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ आदित्य कुमार ने पशुओं की नस्लों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किसान यदि ग्रेडिंगअप करें जिससे पशुओं की नस्लों को सुधारा जा सकता है तथा पशुओं के खान- पान व संतुलित आहार के बारे में विस्तार से चर्चा की। और साथ ही पशुओं में थनैला रोग के लक्षण एवं उपचार को विस्तृत रूप से किसानों को बताकर लाभान्वित किया। बताया कि थनैला से बचाना है तो पशु को दूध निकालने के बाद 20 मिनट तक बैठने नहीं देना चाहिए उन्हें चारा दाना खिलाकर खड़े रखें। कार्यक्रम में उद्यानिकी विभाग के प्राध्यापक एवं कार्यक्रम संचालक डॉ संजीव कुमार ने जीवन में सब्जियों के महत्व तथा उनकी अच्छी उपज के विभिन्न विधियों को बताया तथा कहा कि अगेती एवं पछेती किस्म को उगाने से अधिक लाभ होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गांव के प्रगतिशील किसान दीवान सिंह यादव ने गोष्ठी संयोजकों की बहुत सराहना की तथा भविष्य में किसान गोष्ठी आयोजन के लिए आमंत्रित भी किया। किसान गोष्ठी में बकेवर नगर पंचायत के अध्यक्ष विवेक यादव ने किसान गोष्ठी से होने वाले लाभों को बताया तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में गांव के उन्नतशील किसान ब्रह्मा सिंह , लाला राम दोहरे, राम रतन आदि 65 किसान एवं 120 छात्र- छात्राओं ने गोष्ठी में सहभागिता की।

ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (रावे)
कृषक गोष्ठी

किसान गोष्ठी आयोजित कर किसानों को दी गई जानकारी

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

किसान गोष्ठी में जानकारी देते

बकेवर, लखना। ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव कार्यक्रम के तहत मंगलवार को नगला बनी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें किसानों को फसलोत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी दी गई।

किसान गोष्ठी में प्रो. डॉ एमपी सिंह ने' फसलोत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी देते हुए बताया कि किस तरह किसान सुरक्षित फसलोत्पादन बढ़ाकर अपनी आय को दो गुना कर सकते हैं उन्होंने बताया कि किसान प्रत्येक कृषि कार्य जैसे बुवाई, निराई गुड़ाई सिंचाई फसल सुरक्षा उपाय एवं कटाई समय से संपादित कर फसलोत्पादन बढ़ा सकते हैं। कार्यक्रम में पादप रोग विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ मनोज यादव ने फसल सुरक्षा संबंधी जानकारी देते हुए किसानों को बताया कि अच्छी उपज लेने के लिए सबसे पहले अच्छे एवं स्वास्थ्य बीज का चुनाव करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गांव के प्रगतिशील किसान दीना सिंह यादव ने गोष्ठी संयोजकों की बहुत सराहना की तथा भविष्य में किसान गोष्ठी आयोजन के लिए आमंत्रित भी किया। किसान गोष्ठी में बकेवर नगर पंचायत के अध्यक्ष विवेक यादव ने किसान गोष्ठी से होने वाले लाभों को बताया तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम प्रोफेसर डॉक्टर धर्मेंद्र कुमार आदि के आलावा गांव के उन्नतशील किसान ब्रह्मा सिंह, लाला राम दोहरे, राम रतन आदि 55 किसान एवं 120 छात्र- छात्राओं ने गोष्ठी में सहयोगिता की।

दलहनी फसलों की बुआई से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी

कृषि गोष्ठी में फसलों की पैदावार को लेकर तकनीकी जानकारी दी गई

संवाद न्यूज एजेंसी

गोष्ठी में किसानों को फसलें बचाने की जानकारी देते विशेषज्ञ। संवाद

बकेवर। जनता कालेज बकेवर के कृषि छात्रों के रावे ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव कार्यक्रम के तहत बुधवार को नगला बनी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को फसलों की पैदावार को लेकर वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी दी गई।

प्राचार्य डॉ. राजेश त्रिपाठी के नेतृत्व में हुई गोष्ठी में डॉ. एमपी सिंह ने फसलों वैज्ञानिक तकनीकी से पैदावार की जानकारी देते हुए बताया कि किस तरह किसान अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान प्रत्येक कृषि कार्य जैसे बुआई, निराई, गुड़ाई सिंचाई फसल सुरक्षा उपाय एवं कटाई समय से करके पैदावार बढ़ा सकते हैं।

अधिक उपज देने वाली कम समय में पकने वाली प्रजातियों का चयन करें। पोषक तत्व प्रबंधन समन्वित पोषक तत्व प्रणाली की ओर से गोबर की खाद कंपोस्ट वर्मी कंपोस्ट जैव उर्वरकों हरी खाद के साथ-साथ बुआई के समय रासायनिक उर्वरकों को देकर करें। साथ ही सीड ड्रिल की ओर से लाइन में बुवाई समय से करें।

दलहनी फसलों को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें। इससे भूमि मजबूत होगी।

उन्होंने किसानों को बताया कि यदि सरसों बोना है तो उर्वशी और कृष्णा, गेहूं बोना है तो एचडी 2967 व काला गेहूं की प्रजातियां बोकर अधिक उपज ले सकते हैं। फसल में रसायनों का प्रयोग काम कर जैव का प्रयोग अधिक करें। साथ ही खरपतवारों का नियंत्रण फसल चक्र अपनाकर या चारे वाली फसल लेकर या डबल पलेवा विधि अपनाकर व यांत्रिक विधि अपनाकर करें।

लंबे समय से धान गेहूं फसल चक्र के स्थान पर मक्का, लाही, गेहूं, मूंग या उर्दू टोरिया गेहूं कद्दूवर्गीय या उर्दू सरसों एमपी चरी फसल चक्र अपनाएं। पादप रोग विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने फसल सुरक्षा संबंधी जानकारी देते हुए किसानों को बताया कि अच्छी उपज लेने के लिए सबसे पहले अच्छे एवं स्वास्थ्य बीज का चुनाव करना चाहिए।

फसलों के बीज उपचार के लिए कवकनाशी, कीटनाशी एवं राइजोबियम कल्चर से उपचार करने की प्रक्रिया को क्रमबद्ध ढंग से बताया। उन्होंने बताया कि बुवाई के समय को हमेशा ध्यान में रखें। धान के झुठा कंडवा रोग के प्रबंधन के लिए कवकनाशी प्रापीकोनाजाल का 0.2% घोल बनाकर अर्ध पुष्पा अवस्था पर छिड़काव करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने फसलों की जैसे आलू, गेहूं, चना आदि की उत्तम किस्मों को बोने के लिए प्रोत्साहित किया।

दलहनी फसलों की बुआई से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी

कृषि गोष्ठी में फसलों की पैदावार को लेकर तकनीकी जानकारी दी गई

संवाद न्यूज एजेंसी

गोष्ठी में किसानों को फसलें बचाने की जानकारी देते विशेषज्ञ। संवाद

बकेवर। जनता कालेज बकेवर के कृषि छात्रों के रावे ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव कार्यक्रम के तहत बुधवार को नगला बनी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को फसलों की पैदावार को लेकर वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी दी गई।

प्राचार्य डॉ. राजेश त्रिपाठी के नेतृत्व में हुई गोष्ठी में डॉ. एमपी सिंह ने फसलों वैज्ञानिक तकनीकी से पैदावार की जानकारी देते हुए बताया कि किस तरह किसान अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान प्रत्येक कृषि कार्य जैसे बुआई, निराई, गुड़ाई सिंचाई फसल सुरक्षा उपाय एवं कटाई समय से करके पैदावार बढ़ा सकते हैं।

अधिक उपज देने वाली कम समय में पकने वाली प्रजातियों का चयन करें। पोषक तत्व प्रबंधन समन्वित पोषक तत्व प्रणाली की ओर से गोबर की खाद कंपोस्ट वर्मी कंपोस्ट जैव उर्वरकों हरी खाद के साथ-साथ बुआई के समय रासायनिक उर्वरकों को देकर करें। साथ ही सीड ड्रिल की ओर से लाइन में बुवाई समय से करें।

दलहनी फसलों को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें। इससे भूमि मजबूत होगी।

उन्होंने किसानों को बताया कि यदि सरसों बोना है तो उर्वशी और कृष्णा, गेहूं बोना है तो एचडी 2967 व काला गेहूं की प्रजातियां बोकर अधिक उपज ले सकते हैं। फसल में रसायनों का प्रयोग काम कर जैव का प्रयोग अधिक करें। साथ ही खरपतवारों का नियंत्रण फसल चक्र अपनाकर या चारे वाली फसल लेकर या डबल पलेवा विधि अपनाकर व यांत्रिक विधि अपनाकर करें।

लंबे समय से धान गेहूं फसल चक्र के स्थान पर मक्का, लाही, गेहूं, मूंग या उर्दू टोरिया गेहूं कद्दूवर्गीय या उर्दू सरसों एमपी चरी फसल चक्र अपनाएं। पादप रोग विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने फसल सुरक्षा संबंधी जानकारी देते हुए किसानों को बताया कि अच्छी उपज लेने के लिए सबसे पहले अच्छे एवं स्वास्थ्य बीज का चुनाव करना चाहिए।

फसलों के बीज उपचार के लिए कवकनाशी, कीटनाशी एवं राइजोबियम कल्चर से उपचार करने की प्रक्रिया को क्रमबद्ध ढंग से बताया। उन्होंने बताया कि बुवाई के समय को हमेशा ध्यान में रखें। धान के झुठा कंडवा रोग के प्रबंधन के लिए कवकनाशी प्रापीकोनाजाल का 0.2% घोल बनाकर अर्ध पुष्पा अवस्था पर छिड़काव करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने फसलों की जैसे आलू, गेहूं, चना आदि की उत्तम किस्मों को बोने के लिए प्रोत्साहित किया।